ॐ श्री श्याम बाबा की जय ॐ

श्री श्याम चौरासी

एवम् भजनावली



प्रकाशक :- रत्तीराम सिंगल चौधरीवास वाले

फर्म : रत्तीराम रामबिलास

टोका मशीन विक्रेता श्रीगंगानगर फोन : 450 पी. पी.

श्याम साड़ी इम्पोरियम नोहर

लवली साड़ी संसार, हनुमानगढ़ टाऊन

चौदहवीं बार 1000) सम्वत् 2041 (मूल्य श्याम प्रेम)

भूमिका

श्री श्याम बाबा एवं उसके परम भक्तों के कर कमलों में "श्री श्याम चरित्र एवं भजनावली" समर्पित है ।

सभी भक्त जनों से प्रार्थना है कि मैं कोई कवि या भजनीक नहीं हूं इस पुस्तक के सभी भजन तथा कीर्तन बाबा के अन्य कवि भक्तों द्वारा रचित है जो हमने एकत्र किये है त्रुटियों पर ध्यान न देते हुये प्रेम से ग्रहण करें ।

श्री श्याम बाबा के चरणों का दास

रत्तीराम सिंगल

श्री गंगानगर (राजस्थान)



बंदना

मैं तुमको शीश निवाता हूं, ओ खाटू के बाबा श्याम धणी ।
घुंघराले काले बाल घने, बल खाए रहे ज्यों नागफणी ।
टेढी चितवन और बांकी अदा, हरले पृथ्वी का भार सदा ।
तुम जान रहे हो व्यथा मेरी, फिर भी नहीं बिगड़ी बात बनी ।
क्या कारण से है देर श्याम, बतलाना होगा आज श्याम ।
यह मामूली सा कार्य श्याम, करदो तुमसे है आस धणी ।



श्री गणेश वन्दना

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जिनकी पार्वती, पिता महादेवा ।
एक दन्त दयावन्त, चार भुजदारी ।
मस्तक पर सिन्दूर विराजे, मूसे की सवारी १ ।
पान चढ़े फूल चढ़े, और चढ़े मेवा ।
लड्डूवन का भोग लागे, सन्त करे सेवा २ ।
अन्धन को आंख देवे, कोढियन को काया ।
बांझन को पुत्र देवे, निर्धन को माया । ३ ।
सूर स्वामी शरण आये, सफल करो सेवा ।
सारी संगत ये बनी रहे और करे तुम्हारी सेवा ।४।

जय गणेश देवा
पिता महा देवा:
जय गणेश देवा:
पिता महा देवा:

॥ जय श्री श्याम ॥

-: संक्षिप्त परिचय :-

प्रिय श्याम प्रेमियों व सज्जनों;

जैसा कि शास्त्रकारों का कथन है कि धर्म की लड़ाई के कई युग वीत चुके हैं परन्तु फिर भी धर्म का ह्रास आज तक नहीं हो सका है और न होगा। धर्म पर संकट आया उसके निवारण के लिए स्वयं भगवान ने अवतार लेकर संकट का नाश किया। धर्म की जड़ बहुत गहरी है जिसको कोई भी नहीं उखाड़ सकता है वह न तो आज तक उखडी है और न हीं इसको उखाड़ने वाले ने जन्म लिया है रावण के अधर्म काल में भगवान राम ने अवतार लेकर अधर्म का नाश किया इसी प्रकार कंस के अधर्म काल में श्रीकृष्ण ने असुरों का नाश किया उन्ही श्रीकृष्ण के समय में एक ऐसे बालक ने जन्म लिया जो बड़ा ही पराक्रमी और शौर्यशाली था। पांडव कुल में जन्मे इस बालक का नाम बर्बरीक था जन्म से ही इस बालक के पराक्रम के चिन्ह दिखाई देने लगे। पिता श्री भीम एवं माता अहिलावती के अति स्नेह से पलकर अल्पायु में ही इस बालक ने भगवाव शंकर की कठोर तपस्या कर उन से तीन वाण (एक महान शक्ति) प्राप्त किये। जो समस्त ब्रह्माण्ड को नष्ट करने वाले थे। महाभारत में वर्णन किया है कि बर्बरीक जब ये तीनों बाण लिए युध्द में प्रस्थान कर रहा था तो श्रीकृष्ण ने ब्राह्मण का भेष बनाकर उसकी परीक्षा लेनी चाही। परीक्षा ली गई। परीक्षा में इस बालक ने जिस शौर्य का परिचय दिया उसको देखकर श्रीकृष्ण आश्चर्य चकित हो गये अर्थात एक ही बाण से पीपल के समस्त पत्तों को बींध कर तथा श्रीकृष्ण द्वारा

पांव से दबाये गये पत्ते को बींधकर बाण पुनः तरकस में आ गया इतना ही काफी नहीं, श्रीकृष्ण द्वारा शीश का दान मांगने पर बिना हिचकिचाहट के सहर्ष शीश का दान देकर जिस वीरता का परिचय दिया। और वरदान पाकर महाभारत का किस्सा ही बदल दिया। श्रीकृष्ण ने वरदान दिया कि तुम कलियुग में मेरे नाम से पूजे जाओगे। तुम्हारी पूजा घर-घर होगी। जो मनुष्य सच्चे हृदय से तुम्हारा ध्यान करेगा उसकी संपूर्ण कामनाएं पूर्ण होगी।

खाटू वाले श्याम जी वही है जिनकी घर-घर पूजा होती है। श्रीश्याम प्रभु सारे भारत वर्ष में पूजे जाते हैं और समस्त भक्तों की मनोकामना पूर्ण करते हैं। उन सब भक्तों का भी धन्यवाद करता हूं जिनके भजन इस पुस्तक में प्रस्तुत कर रहा हूं।

॥ जय श्री श्याम ॥







श्री श्याम चौरासी



दोहा - गुरु पद पंकज ध्यान धर, सुमरि सच्चिदानन्द ।
श्याम चौरासी भणत हूं, रच चौपाई छन्द ।।

चौ० महर करो जन के सुखरामी, साँवलशाः खाटू के वासी । १ ।
प्रथम शोश चरणों में नाऊं, किरपा दृष्टि रावरी चाऊं । २ ।
माफ सभी अपराध कराऊं, आदि कथा सुछन्द रच गाऊं । ३ ।
भक्त सुजन सुनकर हरषासी, साँवलशाः खाटू के वासी । ४ ।
कुरु पाँडव में विरोध है छाया, समर महाभारत रचवाया । ५ ।
बलि एक वर्बरीक आया, तीन सुवाण पास में लाया । ६ ।
यह लखि हरि को आई हाँसी साँवलाशाः खाटू के वासी । ७ ।
मधुर वचन तब कृष्ण सुनाये, समर भूमि केहो कारण आये । ८ ।
तीन बाण धनु काँध सुहाये, अजब अनोखा रुप बनाये । ९ ।
बाण अपार वीर सब ल्यासी, साँवलशाः खाटू के वासी । १० ।
वर्बरीक इतने दल माहीं, तीन बाण की गिनती नाहीं । ११ ।
योधा एक से एक निराले, वीर बहादुर अति मतवाले । १२ ।
समर सभी मिल कठिन मचासी, साँवलशाः खाटू के वासी । १३ ।
वर्बरीक मम कहना मानों समर भूमि तुम खेल न जानो । १४ ।
द्रोण गुरु कृप आदि जुझारा, जिनसे पारथ का मन हारा । १५ ।
तूं क्या पेश इन्हों से पासी, साँवलशाः खाटू के वासी । १६ ।

बर्बरीक हरि से यों कहता, समर देखना मैं हूं चाहता । १७ ।
कौन बलि रणशूर निहारू, वीर बहादुर कौन जुझारू । १८ ।

तीन लोक लैबाण से मारू, हंसता रहूं कभी न हारू । १९ ।
सत्य कहूं हरि झूठ न जानो: दोनों दल इक तरफहों मानों । २० ।
एक बाण दल दोऊ खपासी, साँवलशा: खाटू के वासी । २१ ।

बर्बरीक से हरि फरमावें, तेरी बात समझ नहीं आवे । २२ ।
प्राण बचाओं तुम घर जाओ क्यों नादानपना दिखलाओं । २३ ।
तेरी जान मुफ्त में जासी, साँवलशा: खाटू के वासी । २४ ।

गर विश्वास न तुम्हें मुरारी, तो कर लीजे जांच हमारी । २५ ।
यह सुन कृष्ण बहुत हरषाये, बर्बरीक से वचन सुनाये । २६ ।
मैं अब लेऊ परीक्षा खासी, साँवलशा: खाटू के वासी । २७ ।

पात विटप के सभी निहारो, बेध एक से ही सब डारो । २८ ।
कह इतना इक पात मुरारी, दबा लिया पद तले करारी । २९ ।
अजब रचि माया अवनाशी, सांवलशा: खाटू के वासी । ३० ।

बर्बरीक धनुबाण चढाया, जानि जाय न हरि की माया । ३१ ।
बिटपनिहार बली मुस्काया,अजित अमर अहिलावति जाया। ३२ ।
बलि सुमर शिव बाण चलासी, सांवलशा: खाटू के वासी । ३३ ।

बाण बलि ने अजब चलाया, पत्ते बेंध विटप के आया । ३४ ।
गिरा कृष्ण केचरणों माहीं, विधा पात हरि चरण हटाई । ३५ ।
इन से कौन फते किमि पासी, सांवलशा: खाटू के वासी । ३६ ।

कृष्ण कहै बलि बात बताओ, किस दल को तुम जीत कराओ। ३७।
बलि हार का दल बतलाया, यह सुन कृष्ण सन्नाटा खाया। ३८ ।

विजय किस तरह पारथ पासी, सांवलशाः खाटू के वासी । ३९ ।

छल करना यह कृष्ण ने विचारा, बली से बोले नन्दकुमारा । ४० ।
न जाने क्या ज्ञान तुम्हारा, कहना मानो बलो हमारा । ४१ ।
हो निज तरफ नाम पाजासो, सांवलशाः खाटू के वासी । ४२ ।

कहै बर्बरीक कृष्ण हमारा, टूट न नकता प्रण है करारा । ४३ ।
माँगे दान उसे मैं देता, हारा देख सहार देता । ४४ ।
सत्य कहूं न झूठ जरा सी, साँवलशाः खाटू के वासी । ४५ ।

बेशक वीर बहादुर तुम हो, जचते दानी हमें न तुम हो । ४६ ।
कहै बर्बरिक हरी बतलाओ, तुमको चाहिये क्या फरमाओ । ४७ ।
जो मांगे सो हमसे पासी, सांवलशाः खाटू के वासी । ४८ ।

बली अगर तुम सच्चे दानी, तो मैं तुमसे कहूं बखानो । ४९ ।
समर भूमि बलि देने खातिर, शीश चाहिए एक बहादुर । ५० ।
शीश दान दे नाम कमासी, सांवलशाः खाटू के वासी । ५१ ।

हम तुम तीनों अर्जुन माहीं, शीश दान दें को बलदाई । ५२ ।
जिसको आप योग्य बतलावें, वही शीश बलिदान चढावे । ५३ ।
आवागमन मिटे चौरासी, साँवलशाः खाटू के वासी । ५४ ।

अर्जुन नाम समर में पावे. तुम बिन सारथि कौन कहावें । ५५ ।
मैं सिर दान दियो भगवाना, भारत देखन मन ललचाना । ५६ ।
शीश कृष्ण गिरि पर धरवासी, साँवलशाः खाटू के वासी । ५७ ।

शीश दान बर्बरीक दिया है, हरि ने गिरि पर धरा दिया है । ५८ ।
समर अठारह रोज हुआ है, कुरु दल सारा नाश हुआ है । ५९ ।
विजय पताका पाँडव फैरासी, सांवलशाः खाटू के वासी । ६० ।

भीम नकुल सहदेव और पारथ, करते निज तारीफ अकारथ । ६१ ।
यो सोचे मन में यदुराया, इनके दिल अभिमान है छाया । ६२ ।
हरि भक्तों का भरम मिटासी, सांवलशा: खाटू के वासी । ६३

पारथ भीम आदि बलधारी, से यों बोले गिरिवर धारी । ६४ ।
किसने विजय समर में पाई, पूछो सिर बर्बरीक से भाई । ६५ ।
सत्य बात सिर सभी बतासी, साँवलशा: खाटू के वासी । ६६ ।

हरि सबको संग ले गिरिवर पर, सिर बैठा था मग्न शिखर पर । ६७ ।
जा पहुंचे झटपट नन्दलाला, पुनि पूछा सिर से सब हाला । ६८ ।
शिरदानी है सुख अविनासी, साँवलशा: खाटू के वासी । ६९ ।

हरि यों कहे सही फरमाओं, समर जीत है कौन बताओ । ७० ।
वलि कहे मैं सही बताऊं, नहीं पितु चाचा बलि न ताऊ । ७१ ।
भगवत ने पाई स्यावासी, सांवलशा: खाटू के वासी । ७२ ।

चक्र सुदर्शन है बलदाई, काट रहा था दल जिमि काई । ७३ ।
रुप द्रोपती काली का धर, हो विकराल ले कर में खप्पर । ७४ ।
भर-भर रुधिर पिये थीं प्यासी, साँवलशा: खाटू के वासी । ७५ ।

मैंने जो कुछ समर निहारा, सत्य सुनाया हाल है सारा । ७६ ।
सत्य वचन सुनकर यदुराई, वर दिन्हा सिर को हर्षाई । ७७ ।
श्माम रूप मम धर पुजवासी, साँवलशा: खाटू के वासी । ७८ ।

कलि में तुमको श्याम कन्हाई, पूजेगें सब लोग लुगाई । ७९ :
मन वचन कर्म से जो ध्यायेगें, मन इच्छा फल सब पायेगें । ८० ।

निम्बू सद्गति को पा जासी, साँवलशाः खाटू के वासी । ८१ ।
सागर से धनवान बनाना, पत्नि गोद में सुवन खिलाना । ८२ ।
सेवक आया शरण तिहारी, श्री पति यदुपति कुंज बिहारी । ८३ ।
सब सुख दायक आनन्द रासी, साँवलशाः खाटू के वासी । ८४ ।

लख चौरासी है रचि भक्त जनन के हेत ।
बृज निशि वासर जो पढ़ें सकल सुमगल देत ।
लख चौरासी छूटिये श्याम चौरासी माए ।
अछत चार फ़ल पाय कर आवगमन मिटाय ।

जय श्याम ! जय श्याम ! ! जय श्याम ! ! !

सरस सिलौने सोहने सुन्दर सांवल शाह ।
रखिये अपने दास पर अपनी मेहर निगाह ।
खाटू खटेले बीच में बनो आपको धाम ।
जो कोई ध्यावे प्रेम से पूर्ण होय सब काम ।
फाल्गुन शुक्ला द्वादशी उत्सव भारी होय ।
बाबा के दरबार से खाली जाय न कोय ।
श्याम नाम भजते रहो श्याम बड़े दातार ।
सब संसय मिट जायेंगे कहत राजकुमार ।

ॐ ❋ ॐ ❋

॥ श्री श्याम देवाय नमः ॥

श्री श्याम बाबा की अद्‌भुत झांकी

श्री गंगानगर (राजस्थान)





॥ भजन ॥

★ श्याम ज्योत ★

जलती रहे खाटू वाले ज्योत तेरी जलती रहे

किसने बाबा तेरा भवन बनाया
किसने चंवर ढुलाया ॥ ज्योत तेरी……..

भगतां ने बाबा तेरा भवन बनाया
सेवक चंवर ढुलाया ॥ ज्योत तेरी…… ….

केसर चोला बाबा अंग विराजे
चन्दन तिलक लगाया ॥ ज्योत तेरी ……..

ध्वजा नारियल सवा रुपया
तेरे भेन्ट चढाया ॥ ज्योत तेरी ……..

माक्खन मिश्री का थाल सजाया
तेरे भोग लगाया ॥ ज्योत तेरी……….

दूर दूर से यात्री आवे
आकर शीश नवावे ॥ ज्योत तेरी ……..

नौरंग शाह् बाबा दर तेरे आया
नोबत द्वार चढ़ाया ॥ ज्योत तेरी ……..

श्याम बहादुर ने ध्यान लगाया
अपने पास बुलाया ॥ ज्योत तेरी …… ..

'प्रेम मण्डल' बाबा दर तेरे आया
आकर शीश नवाया ॥ ज्योत तेरी……..

॥ भजन ॥

दर्शन की अभिलाशा

दोहा-खड़्यो द्वार पे सांवरा, कब से करूं पुकार।
दर्शन दे दो दास ने, म्हारी सुनले लखदातार ॥

बाबा के सिर ऊपर छत्र लटके।
दर्शन दे दे बाबा श्याम सेवक भटके ॥

सेवक भटके ओ बाबा सेवक भटके ।
दर्शन दे दे बाबा श्याम सेवक भटके ॥

बाबा के माथे माहीं हीरो चमके,
सिंहासन बैठ श्याम धनी ने सारा सेवक निरखे। सेवक ·····

बाबा के काना माहीं कुण्डल झलकै,
दयालु थारे बिना म्हारा सारा कारज अटके। कारज··

बाबा के गल विच हार लटके,
दुःखी देख के भक्त आये लीले चढ़के । लीले ·····

फागुन में आवाँ बाबा सज धजके,
मेलो देखाँ श्याम थारो मन भरके। मन··· ·····

सेवक थारा अर्ज करे सुन मेहर करके,
नैया पार लगादे बाबा तूं केवट बनके। केवट········· ··

॥ भजन ॥

बाबा सूं अर्ज

दोहा-टाबर थारो द्वार पे, रो-रो करे पुकार ।
बेडो म्हारो पार करो, थारो सांचो है दरबार ॥

म्हारो बेडो पार लगा दिजो, खाटू वाला श्याम ।
खाटू वाला श्याम, सुन लीले वाला श्याम । म्हारो…

म्हाने एक आसरो थारो, नहीं और कोई है म्हारो ।
विपदा में-साथ निभा दिजो, खाटू वाला श्याम ॥म्हरो……

म्हारी नांव भंवर विच डोले, वा खाय रही हिचकोले ।
अटकी न- पार लगा दिजो, खाटू वाला श्याम ॥ म्हारो…

म्हारे मन में आशा जागी, थारे नाम की लगन है लागी ।
म्हारे मन का कष्ट मिटा दिजो, खाटू वाला श्याम ॥म्हारो….

घर-२ में चर्चा थारी, थे दीन दु.खी हितकारी ।
इस टाबर ने - अपना लिजो, खाटू वाला श्याम ॥म्हारो….

भक्त वत्सल भगवान की जय !

।। भजन ।।

श्याम दरबार

दोहा –जो भी चाहो मांगलो, श्रीश्याम लखदातार से ।
आज तक कोई नहीं, खाली गया दरबार से ।।

बठयो खाटू में लगाकर दरबार, श्याम धणी राज करे ।
यो तो कर देवे भक्ताँ रा बेड़ा पार, जो ऐसे अरदास करे ।।
काना में थारे कुण्डल सोंहे, गल बैजन्ती माला ।
सिर पर थारे मुकुट विराजे, नैन लगे मतवाला ।।
अर्जी सुनसी म्हारी भी लखदातार । श्याम धणी···
करमाँ बाई को खीचड़ खायो, साग विदुर घर खायो ।
म्हे भी बुलावा बाबा थानै, म्हारे घर भी आवो ।
त्यागा दुर्योधन रा मेवा करतार । श्याम धणी ········
गाँव गांव में शहर शहर में पूजा होवे थारी ।
म्हे भी खाली झोलो ल्याया भरदो झोली म्हारी ।।
म्हारे आंगणिये में आवो सरकार । श्याम धणी·········
अन्तंयामी घट घट वासी थाने के समझावां ।
भूल चूकं की दाता थाँसे म्हे तो माफी चाँवाँ ।।
थे तो खोल देवो कुबेरा भण्डार । श्याम धणी ····· ·····

प्रेम से बोलो

सच्चे दरबार की जय ।

॥ भजन ॥

मोर छड़ी

तर्ज-मेंहदी रचो थारे हाथा में............

मोर छड़ी थारे हाथा में, हिरो चमके माथा में
थारे गल पुष्पा को हार बाबा श्याम धणी......

नाम सुनयो है जब से थारो निदडली नहीं आख्या मैं
घणी दूर से चलकर आयो दे दर्शन थारे भगता ने
आँसू भरया मेरी आंख्या में, नैया हे भव सागर में
मेरी नैया कर दो पार बाबा श्याम धणी ....

थे कहो तो बाबा थारी पायलड़ी बन जाऊं मैं
पायलड़ी बन जाऊं थारे चरणां में रम जाऊं मैं
भजन सुनावां म्हे थाने, दर्शन देवो थे म्हाने
मेरी अर्जी सुन दातार बाबा श्याम धणी .....

थे कहो तो बाबा थारी मुरलिया बन जाऊं मैं
मुरलिया बन जाऊं थारे होठा से लग जाऊं मैं
चाहे जेसा सुर देवो, पर म्हाने ना ठुकराओ
थे म्हारा सिरदार, बाबा श्याम धणी ....

म्हे सुनी है बाबा थारो मायो अपरमपार घणी
सब भगता ने दर्शन देवे खाटु वालो श्याम धणी
दौड़यो-दौड़यो आवे है सब ने गले लगावे है
यो ऐसो लखदातार बाबा श्याम धणी . ...

'आलूसिंह' कहे श्याम बिहारी सब भक्तों की टेर सुनो
सब भक्ता के संग में बाबा म्हारे सिर पर हाथ धरो
भजन सुनावा म्हे थाने भक्ती देवो थे म्हाने
म्हाने भक्ती दे दातार, बाबा श्याम धणी ....

॥ भजन ॥

श्याम संग होली

दोहा-ये दुनियां कुछ नहीं देगी, आ मेरे श्याम की नगरी में
उधर पीतल ही पीतल है, ईधर सोना ही सोना है ।

ये झोली भर लो भक्तो, रंग और गुलाल से ।
होली खेलांगा आपा, गिरधर गोपाल से ॥ होली...
कोरी-कोरी कलश मंगा कर, उसमें रंग घुलवाना ।
लाल गुलाबी, नीला पीला, केसर संग मिलवाना ।
बच-बच के रहना उनकी, टेढो मेढी चाल से ॥ होली
लायेंगे वो संग में अपने, ग्वाल बाल की टोली ।
मैं भी रंग अबीर मलूंगा, और माथे पे रोली ।
गायेंगे साथ मिल के, चिमटा खड़ताल पे ॥ होली ..
श्याम पिया की बजे बाँसुरिया, ग्वालो के मंजीरे ।
चंग बजावे ललीता नाचे, राधा धीरे-धीरे ।
गाऊंगा भजन सुहाने, मैं भी सुर ताल पे ॥ होली...
देखूंगा गोकल बरसाना, वो वृन्दावन प्यारा ।
श्याम धणी खाटू वाले का, प्यारा धाम है न्यारा ।
मांगे जो पावे सब कुछ, ऐसे दातार से ॥ होली ..



॥ भजन ॥

✲卐 श्री श्याम दरबार 卐✲

बाबा जी थारा खूब सजा है दरबार ।
दूर-२ से आकर सेवक बोले जय-जयकार ॥
रतन-जड़ित सिंहासन बैठे, लटके छत्र हजारी ।
गल वैजयन्ती माल बिराजे, शोभा अनुपम प्यारी ।
थारे शंख नगारा बाजे, थारे द्वार पे हनुमन गाजे-थारे .
मैं भी आया हूं दरबार बाबा
हारे का तुम जीत कराने, तुम हो लख दातारी ।
भक्त की नैया पार लगाते, सबके तुम हितकारी ।
हम हैं जन्म-२ से तेरे, तेरे द्वार पे लाये डेरे-तेरे
मेरी नैया पड़ी है मझदार बाबा
बाबा जी थारे चरण कमल में, जीवन भेंट चढाया ।
दुनिया सारी छोड़ के बाबा, थारी शरण में आया ।
थारे नाम की ज्योत जगांऊं, थाने नया-२ भजन सुनाऊं थाने
अब मेरी ओर निहार बाबा ..
आज तलक थारे द्वारे से, भक्त गया ना खाली ।
रोता-२ आया घर से, इच्छा अपनी पा ली ।
सुन भीम पुत्र बलकारी, मैं तो थारे दर का भिखारी-मैं .
अब सुनलो मेरी पुकार.. बाबा...
देखो भीड़ लगी है भारी, आ जाओ दरबार ।
दर्शन को आये नर नारी, सुनलो लखदातार ।
थारा रूप बड़ा है प्यारा, थारे नाम का लेके सहारा-थारे..
आया दर पे 'राजकुमार'...बाबा ..

।। भजन ।।

सच्ची भक्ती

दोहा– हाजिर है वो हर जगह, श्याम रूप अवतार ।
करे ना देरी एक पल, हो यदि करूण पुकार ।।

आँखों में हो आँसू और होठों पे हो नाम ।
फिर क्यों पिघले नहीं श्याम, फिर क्यों आवे नही श्याम

अपने पापों पर पछता कर जब भी तूं रो देगा ।
तेरा इक-इक आंसू तेरे पापों को धो देगा ।
मन मोहन का दर्शन होगा, आहों का इनाम ।। फिर……

आंसू है वो दर्पण ज़िसमें रूप श्याम का बसता ।
इतने मैं प्रभु मिल जावे तो यह सौदा भी सस्ता ।
कितने मंहगे श्याम हैं मिलते, इतने सस्ते दाम ।। फिर··

वो आँसू भी क्या आँसू जो अपने लिये बहाये ।
प्रीतम के लिए बहें जो आंसू वो आँसू कहलाये ।
ऐसे हो आंसू पर भक्तो, दौड़ आते हैं श्याम ।। फिर···



।। भजन ।।



तर्ज- एक्सीडेन्ट हो गया.........(कुली)

दोहा - संकट मेरे दूर करो, मंगल कर दो काज ।
आज पुकारे भक्त तेरे, बाबा दर्शन दे दो आज ।

बाबा सुन लेते हैं बिनती जरूर ।
जब भी पुकारो वो आते जरूर ।।
है भक्तों के हितकारी, श्री खाटू श्याम बिहारी ।
दरबार आ गये, बाबा-बाबा .. ..

श्री श्याम खाटू वाला है, भक्तों का रखवाला ।
है लीले घोड़े वाला, और श्याम रूप मतवाला ।।
है शोभा अनुपम भारी, आते दर्शन को नर नारी ।
हम भी दर आ गये, बाबा-बाबा ......

जो आकर शीश नवावे, वो खाली कभी ना जावे ।
वो इनका ही हो जावे, अपनी झोली भर कर जावे ।
ये सच्चे हैं दातारी, खाटू के श्याम बिहारी ।।
हम भी शरण आ गये, बाबा-बाबा ....

सब मिलकर भजन सुनाओ, बाबा को आज रिझाओ ।
फिर रूच-रूच भोग लगाओ, और जय-जयकार बुलाओ ।
'गोयल' ने अर्ज गुजारी, हम को है शरण तिहारी ।।
क्यों देरी कर रहे बाबा-बाबा.................

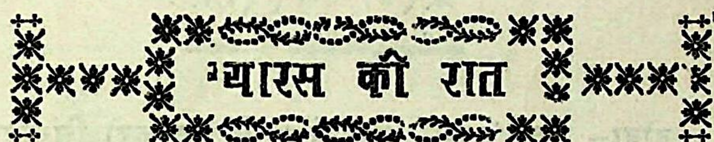
॥ भजन ॥

ः बाँसुरी की चोरी ः

दोहा – प्राण सूं प्यारी लागै, कालजडारी कोर ।
वा बंसी म्हारी राधिका; आज लई किण चोर ॥

श्री कृष्ण– ओ राधा म्हाने सांची बताओ जी ।
कुण बैरन ले गई, आज म्हारी बांसरी ॥
श्री राधा - साँवरिया प्यारा म्हे नहीं जाणा जी ।
कुण बैरन ले गई, या थारी बांसरी ।
श्री कृष्ण - ओ राधा थाने काँई बतावाँ जी ।
हिवड़े सु भी ज्यादा, लागे प्यारी बांसुरी ॥
श्री राधा - साँवरिया प्यारा मधुबन चालाँ जी ।
चाहे जितनी ल्यावां, वांसारी बांसरी ।
श्री कृष्ण– ओ राधा म्हारो जी ना जलावो जी ।
थे ल्या देवा म्हारे, मनड़ा री बांसरी ॥
श्री राधा - साँवरिया म्हाने भोत सताया जी ।
म्हारो मनड़ो ललचायो, बैरन थारी बांसरी ॥
श्री कृष्ण - ओ राधा थाने कदे ना सतावाँ जी ।
म्हाने सोगन है थारी, ल्यादो म्हारी बांसरी ॥
श्री राधा - थारी बंसी कितना नाच नचाया जी ।
सारे ब्रज न मोयो, जादूगारी बाँसरी ॥
श्री कृष्ण - ओ राधा थाने पाछी दे देस्यां जी ।
एक बर तो थे देदयो, उधारी बांसरी ॥
श्री राधा - ओ राधा थे काँई पुण्य कमाया जी ।
बस में थारे दोनों, गिरधारी बांसरी ॥
'ताराचन्द' भी थारो नित जस गावे जी ।
धन-धन राधा थाने, और बलिहारी बाँसरी ॥

॥ भजन ॥



दोहा—नाव पड़ी मझदार में, सुन मेरे करतार।
आकर पार लगाय दो, हो लीले असवार ॥

ग्यारस की है रात आजा लीले चढके ।
पाछे चल जाईये बाबा मुलाकात करके ॥

हाथ जोड़ कर अर्ज करूं मैं, आजा खाटू वाला ।
देर कराँ में सार नहीं है, लीले घोड़े वाला ॥
भूलो कैया बाबा श्याम, आज वादो करके ॥ पाछे......

दीन बन्धु भगवान कहावे, मतना देर लगावे ।
मायत है तूं टाबरियाँ को, क्यों घणों तरसावे ॥
आख्यां भर-भर आवे श्याम, थाने याद करके ॥ पाछे ..

जनहित खातिर शीश दान दे, कहलाया थे दानी ।
गौर करो अब टाबरियां को, सुनलो करूण कहानी ॥
कसल्यो लीले की लगाम, मेरी टेर सुनके ॥ पाछे .....

'प्रेम मण्डल' की योही अरजी, आगे मरजी थारी ।
लीले ऊपर आप पधारो, खाटू श्याम बिहारी ॥
म्हारे सिर पर धर दो हाथ, बाबा आ करके ॥ पाछे...

॥ भजन ॥

※रंग बरसे※

दोहा– भक्त श्याम को प्रेम से खूब करो सिंगार।
खाटू वाले श्याम की बोलो जय जयकार ॥

रंग बरने तेरे भवन पे, श्याम रंग बरने !

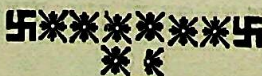
खाटू में थारा भवन है भारी।
कोई खाली ना जावे, बाबा के दर से ॥ रंग ·· ···

मृदंग बजे ढ़ोलक और छैला ।
पोये ये अमृत सारे, अभागा तरसे ॥ रंग ·· ·····

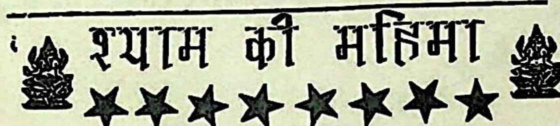
जगमग-जगमग जोती जली है ।
दर्शन करने आये, भक्त तेरे दर पे ॥ रंग......

रतन जड़ित सिहासन साजे ।
दे दो दर्शन आके, भक्त है तरसे ॥ रंग ·· ·····

मंडल पे कृपा हो तेरो दातारी ।
हाथ कभी ना हटाना 'गोयल' के सिर से ॥ रंग ···



॥ भजन ॥



तर्ज :- दिल के अरमा ·········· (फिल्म-निकाह)

टेक :- कर ले बन्दे ध्यान, हरदम श्याम का ॥
खाटू वाले देवता, बलवान का ॥

अन्तरा-कहते क्यों घबरा गये, हम पाप से ।
कैसे बच जायेगें, हम इन्साफ से ॥
करते जाय जाप, इसके नाम का । खाटू वाले····· ··

लोभी करते बात, हरदम दाम का ।
श्याम बिन है जिन्दगी, किस काम की ॥
काँटों में फल ना मिलेगा आम का । खाटू वाले ·····

अहलवती का लाल, बाबा श्याम है ।
खाटू में इनका निराला धाम है ॥
खाटू में पहरा लगे, हनुमान का । खाटू वाले ·····

नाम का आधार, हमको श्याम का ।
रटते जाये नाम, हम घनश्याम का ॥
'सोल' कहे हमको, सहारा तेरे नाम का । खाटू वाले ·····

।। भजन ।।

जय बाबे दी करदा जा

दोहा–लखदातारी श्याम है, कलयुग दा अवतार ।
भरदा झोली भक्ता दी सुनदा करूण पुकार ।।

(तर्ज–पोड़ी-पोड़ी चढ़दा जा··· ·· ····)

होलि-होलि चलदा जा जय बाबे दी करदा जा ।
जय बाबे दी-जय बाबे दी-जय बाबे दी करदा जा । होलि······

रींगस आया तैयारी कर ले पैदल खाटू जाना है,
मन्दिर जाके श्याम धणी दे चरणां विच गिर जाना है ।।
सारे बोलो जय बाबे दी, मिलकर बोलो जय बाबे दी ।। जय बाबे··

खाटू जाके श्याम कुंड में जदो तू गोता लाऊगा,
जन्म-जन्म दे धो पापा नूं जीवन सफल बनाऊगा ।।
बच्चे बोलो जय बाबे दी, बुढढ़े बोलो जय बाबे दी ।। जय बाबे··

लखदातारी श्याम बिहारी मान भक्त दा करदा है,
अपने सच्चे भक्तां दी झोली विच खुशियाँ भरदा है ।
अगले बोलो जय बाबे दी, पिछले बोलो जय बाबे दी ।। जय बाबे··

सच्चे मन नाल मन्दिर जाके जो भी भक्त पुकार करे,
मेहर करे मेरा लखदातारी उसदा बेड़ा पार करे ।।
बहिनां बोलो जय बाबे दी, माँईयाँ बोलो जय बाबे दी ।। जय बाबे

दर्शन करके श्याम धणी दे जन्म सफल हो जाँदा है,
दास 'गोयल' कहंदा है तैनूं फिर क्यों देर लगाँदा है ॥
सारे बोलो जय बाबे दी, मिलकर बोलो जय बाबे दी ॥ जय बाबे··
आ पहुंचे-आ पहुंचे दरबार श्याम तेरे आ पहुंचे ।
आंवागे-आँवागे हर साल श्याम तेरे आँवागे ।
गावाँगें- गावाँगें गुण गान श्याम तेरे गांवाँगे ॥

जय कारा-खाटू वाले दा

बोल सांचे दरबार की जय ।

॥ भजन ॥

(तर्ज : मारवाड़ी ····· ···)

पगाँ री पायलड़ी भीजे, हाथां रों चुड़लो,
कन्हैया जमुना में डर लागे रे भर ल्यादे घड़लो ॥ भर ·······

दयौंराणी जेठानी म्हारी पीवरीये गई ।
तड़के आजा रे नन्द लाला, तने घालुंगो दही कन्हैया ···

सासु जा ने सुणे कोन्या ननदल तो भोली ।
तड़के आजा रे नन्द लाला, म्हारी शामली पोलो ॥ कन्हैया ···

ईबकै तो मैं आई कान्हा, सखियाँ के भेले में ।
फागुन में मिलस्याँ रे नन्दलाला, आपाँ खाटू क मेले में ॥ कन्हैया

घड़ियो भर दे सिर पर धर दे, म्हाने होवे ऊंवार ।
कहे चन्द्र सखी भक्तों की नैया कर दे पग्ली पार ॥ कन्हैया ···

बोल श्री कृष्णचन्द्र की जय

॥ भजन ॥

कहणो मान ले

तर्ज :- पलो लटके.........)

टेक - श्याम रटले रे भाया श्याम रटले।
जरा सो, कहणो म्हारो मानले तूं श्याम रटले ॥

अन्तरा-मुट्ठी बांधो आयो जगत में, हाथ पसारिया जासी ।
दया धर्म की करले कमाई, करणी आड़ी आसी ॥
जरा सो कहणो.........

मोह माया में भूम रहो तूं, करतो थारी मारी ।
ज्ञान धर्म री वात कवे, जद लागे तने खारो ।
जरा सा कहणा ......

जवानो री अगड़ाई में तूं टेड़ो मेढ़ो चाले ।
तने नहीं मालूम के, काई होसी थारो आगे ।
जरा सो कहणो........

छोटी मोटी बणो हवेलो, अठे पड़ी रह जासी ।
दो गज कफन रो टुकड़ों हो, आखिरो में सागे जासी ।
जरा सो कहणो ....

ओ 'श्याम' मण्डल केवे रे भाया, ओ मोको फिर ना आसो ।
श्याम नाम सुमरियो नहीं तो, अन्त काल पछतासी ।
जरा सो कहणो............

॥ भजन ॥



भक्त रखवाला



तर्ज :- ये सारी दुनियाँ है आनी जानी............(अनजाना)

तुम हो दयालु ओ डमरू वाले, नैया हमारी तेरे हवाले ।
आकर बचा ले भोले आकर बचाले ।

हमने सुना है जो कोई तेरे दर पर आते हैं,
दर्श वो तेरा पाते हैं, जग में नाम कमाते हैं ।
देवों में तुम हो देव निराले, तेरे बिना हमें कौन संभाले-भोले .....

तेरे दर से कोई भी ना खाली आया है,
जो मांगा तुम से पाया है, ये भोले तेरी माया है ।
वरदान सबको ओ देने वाले, भक्तों के संकट टारन वाले। भोले ..

आशा लेकर मन में तेरे द्वारे आये है,
दर्श की आश लगाये है. सुनाने अर्जी आये हैं ।
अरजी यहीं है जग रखवाले 'ताराचन्द' को दास बनाले । भोले...

बोलो शंकर भगवान की जय ।

।। भजन ।।

।o राम भक्त हनुमान o।

o o o o o o o o

तर्ज- हुसन हाजिर है·········(लैला मजनू)

पवन सुत चल दिये सन्जीवन बूंटी लाने को।
लगी थी मन में लगन राम के दिवाने को ।।

राम यों सोच रहा अवध में कैसे जाऊं ।
सुमित्रा माता को मुख जाके कैसे दिखलाऊं ।
सोच मन में तो करे, ना दिल में धीर धरे,
जो लक्ष्मण बचे नहीं तो, साथ फिर राम मरे ।
आया था वन में-भैया सेवा तो बजाने को । लगी···

द्रोण गिरी के ऊपर जा पहुंचा वलदाई ।
लगीं थी आग वहां बूंटी ना नजर आई ।
सोच हनुमन किया, प्रभु का ध्यान किया ।
उठाया पहाड़ फिर तो चल वलवान दिया ।
पहर था एक बाकीं-रात बीत जाने को । लगी ··

अवध के उपर लिये पहाड़ बली आया था ।
समझकर निशिचर भरत बाण चलाया था ।
गिरा तो राम बोला, भरत से भेद खोला ।
तोर पर बैठा नहीं, पवन सुत ऐसे बोला ।
पहले सूरज से पहुंचू-वीर को बचाने को, लगी······

पवन सुत आता देख सारा दल हर्षाया था ।
लाये संजीवन राम लक्ष्मण को मिलाया था ।
धरे हम ध्यान तेरा, करे गुण गान तेरा ।
कहे 'सोना' ओ कपि, सहारा हम को तेरा ।
भक्त सब मस्त रहे-गुण तेरा गाने को, लगी··· ··

।। भजन ।।

)(जेड़ा श्याम ना जपे)(

दोहा–श्याम दा जिसनूं सहारा; दुःख कदे ना पाऊगा।
सुखी जीवन ओसदा बने, जो श्याम दा हो जाऊगा।

ओदो जीभा नूं लग जावे ताला, अलीगढ़ वाला,
के जेड़ा तेरा नाम ना जपे ।।
नाम ना जपे श्री श्याम ना जपे ।। ओदो··· ·····
श्याम रूप कलयुग अवतारी।
भक्ताँ दी करदा रखवारी।
लीले घोड़े वाला, है खाटू वाला-के जेड़ा तेरा ·· ·····
रोदां जो भी दर ते जादां ।
खाली ना वो हरगिज आदाँ ।
झोलीयाँ भरने वाला, है मुरली वाला - के जेड़ा तेरा······
बिगड़े बाबा कम बनादां।
भक्ताँ नूं है गले लगादां।
दुःखड़े हरने वाला, है देव निराला—के जेड़ा तेरा··· ······
सच्चा है साडा लखदातारी।
दास 'गोयल' जादाँ बलिहारी।
श्याम रूप मतवाला, है बन्सो वाला—के जेड़ा तेरा······ ··

सारे बोलो जय बाबे दी।

प्रेम से बोलो-जय बाबे दी ।।

॥ भजन ॥

मैया दा दुपट्टा

किने रंगया दुपट्टा तेरा लाल, माता जी तेरा किने रंगया।

पहला दुपट्टा तेरा ब्रह्मा ने रंगया।
रंगया वेदा दे नाल, दुपट्टा तेरा किने रंगया। किने…

दूसरा दुपट्टा तेरा, विष्णु ने रंगया।
रंगया सुदर्शन दे नाल, दुपट्टा तेरा किने रंगया। किने…

तीसरा दुपट्टा तेरा भक्तां ने रंगया।
रंगया भक्ति दे नाल, दुपट्टा तेरा किने रंगया। किने…

चौथा दुपट्टा तेरा सेठा ने रंगया।
रंगया माया दे नाल, दुपट्टा तेरा किने रंगया। किने…



॥ भजन ॥



(तर्ज नखरालो देवरियो-सुपातर वीनणी)

दोहा—श्याम नाम जग में बडो, श्याम बडो दातार ।
श्याम सरीखो जगत मैं, कोई ना पालनहार ॥

बन्सी वालो सांवरियों राधा पर जादू करग्यो ॥

बैठ कदम पर बन्सी बजावे सब सखियां मिल आई ।
एक सखी उठ पायल पहरे दूजी पहन ना पाई ॥
यो कृष्ण मुरारी रे बन्सी में जादू करग्यो ॥ बन्सो··· ·········

वृन्दावन की कुंज गलीन में श्यामा रास रचाया ।
रास रचाये नाच दिखाये अदभुत खेल खिलाया ॥
नन्द जी को लालो रे-जगत पर जादू करग्यो ॥ बन्सी ·········

कृष्ण मुरारी ब्रह्म रूप है राधा इसको माया ।
कैसा सुन्दर रूप है इनका भक्तों के मन भाया ॥
गोकुल को बसैया रे-जगत में जादू करग्यो ॥ बन्सी ·············

श्याम कहे घनश्याम कहे कोई कहता है गिरधारी ।
कहता 'सोना' लखदातारी सुनना अर्ज हमारी ॥
यो जग रखवालो रे-भगताँ पर जादू करग्यो ॥ बन्सी··········

॥ बन्सी वाले की जय ॥

गरीब दा भोग

खा ले बाबा जी मेरा भोग गरीब दा ।
भोग गरीब दा-भोग गरीब दा । खा ले..............

करमाँ वाई दा खीचड़ खाया ।
रुच-रुच भोग लगाया श्याम जी। मेरा भोग........

भक्त सुदामा दे तन्दुल खाये।
दौड़े-दौड़े नंगे पाँव आये श्याम जी । मेरा भोग................

नरसी भक्त दी हुंडी सिकारी।
भात भरन नूं आये श्याम जी। मेरा भोग..........

झूठे बेर सी भिलनी लाई ।
प्रेम नाल सब खाये राम जी । मेरा भोग ....

दुर्योधन दे मेवा त्यागे ।
साग विदुर घर खाया श्यामजी । मेरा भोग ....

फिर क्यों अज है देर लगाई।
दौड़ें-दौड़े आंगना में आओ श्यामजी । मेरा भोग..............

आरती भोग की

या विधि श्याम बाबा भोग लगायो,भक्त वछल हरि नाम कह्रायो।
तुम्हारी विभो प्रभु तुम्हरे आगे, हमसे दीनन को कह लागे ।
ज्यों करमां की खिचड़ी खाई, मोह लिये सुर नर मुनिराई।
भक्त सुदामा के तन्दुल लीने, कंचन महल अमित सुख दीने
प्रेम प्रीति कर भोजन कीजे, बचे शेष दासन को दीजे ।
'रामानन्द' भर राखो झारी, अचवो श्री बाबा श्याम बिहारी।

आरती दुर्गा जी की

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी ।
तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ।।टेक।।
माँग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को ।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्रबदन नीको ।। जय० ।। १
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे ।
रक्त पुष्प गल माला, कंठन पर साजे ।। जय० ।। २
केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी ।
सुर नर मुनिजन सेवत, तिनके दुःख हारी ।। जय० ।। ३
कानन कुण्डल शोभित, नाशाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ।। जय० ।। ४
शुम्भ निशुम्भ विडारे, महिषासुर धाती ।
धूम्र विलोचन नैना, निशदिन मदमातो ।। जय० ।। ५
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।। जय० ।। ६
ब्राह्मणी रूद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।। जय० ।। ७
चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरू ।
बाजत ताल पखावत, अरू बाजत डमरू ।। जय० ।। ८
तुम हो जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन के दु.ख हरता, सुख सम्पति करता ।। जय० ।। ९
भुजा चार अति शोभित, कर मुद्रा धारी ।
मन वाँछित फल पावत, सेवत नर नारी ।। जय० ।। १०
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती ।
श्री मालकेतु में राजत, कोटिरत्न ज्योति ।। जय० ।। ११
श्री अम्बेजी की आरती, जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुखसम्पति पावे ।। जय० ।। १२



ॐ जय श्री श्याम हरे, बाबा जय श्री श्याम हरे ।
खाटू धाम विराजत, अनुपम रूप धरे ।। ॐ जय श्री श्याम हरे ..
रतन जड़ित सिहासन, सिर पर चवर ढुरे ।
तन केसरियो बागो, कुण्डल श्रवण पड़े ।।ॐ जय श्री श्याम हरे...
गल सुमनों की माला, सिर पर मुकट धरे ।
खेवत धूप अग्नि पर, दीपक ज्योति जरे ।।ॐ जय श्री श्याम हरे ..
मोदक खीर चूरमा, कचन थाल भरे ।
सेवक भोग लगावत, सेवा नित्य करे ।।ॐ जय श्री श्याम हरे...
झाँझ मृदन्ग नगारा, नौबत द्वार धुरे ।
भक्त आरती गावे, जय-जयकार करे ।।ॐ जय श्री श्याम हरे ..
जो ध्यावे फल पावे, मन का दुःख बिसरे ।
सेवक निशदिन मुख से श्याम-२ रट रे ।। ॐ जय श्री श्याम हरे .

विसर्जन

भक्ति से झोली भर दे, मेरे श्याम मुरारी बनवारी ।
बस इतनी सी कृपा करदे, मेरे श्याम मुरारी बनवारी ।

श्री श्याम के गल में जयमाला ।
खाटू वाले के गल में जयमाला ।
गणपति के गल में जयमाला ।
हनुमान के गल में जयमाला ।
शंकर के गल में जयमाला ।
सब देवों के गल में जयमाला ।
सब भक्तों के गल में जयमाला ।

दीन बन्धु दीना नाथ, मेरी लाज तेरे हाथ ।

आरती जय  जगदीश हरे

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे ।
भक्त जनन के संकट, छिन में दूर करे ।। ओ३म् । १
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मनका ।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका ।। ओ३म् ।। २
माता पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी ।
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी ।। ओ३म् ।। ३
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ।। ओ३म् ।। ४
तुम करूणा के सागर, तुम पालन कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भरता ।। ओ३म् ।। ५
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राण पति ।
किस विध मिलू गुसाँइ, तुम से मैं कुमति ।। ओ३म् ।। ६
दीन बन्धू दुःख हरता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे ।। ओ३म् ।। ७
विषय विकार मिटाओ, पाप हरे देवा ।
श्रद्धा भक्ति बढाओ, सन्तन की सेवा ।। ओ३म ।। ८



 450 P.P.

रत्तीराम रामबिलास

स्पैशल
मक्खन
टोका
रजि. न.
242909 B



जय हिन्द
बम्ब
टोका
रजि. न.
5015

टोका मशीन बेलना, ग्रीस, लिस्टर व पीटर डीजल इन्जन व इन सब के स्पेयर पार्टस, पट्टा, पुली व सभी कृषि औजारों के विक्रेता ।

122 आर्य समाज रोड
श्री गंगानगर

आनन्द प्रिन्टर्स, 120 गोल बजार श्रीगंगानगर (राज०)